क्या बंदर हमारी मंशा को समझ सकते हैं

पिछले कुछ वर्षों में कई ऐसे अनुसंधान हुए हैं जिनसे पता चला है कि तार्किक सोच इन्सान की बपौती नहीं है। अब एक ताज़ा शोध कार्य ने इस विषय में समझ को आगे बढ़ाया है। इससे पता चला है कि बंदर दूसरे 'व्यक्ति' की नीयत को समझ सकते हैं और यह भी विश्लेषण कर सकते हैं कि वह कोई क्रिया क्यों कर रहा है या अगली हरकत क्या करेगा।

इटली के पर्मा विश्वविद्यालय के विटोरियो गेलीस ने बताया है कि मैकाक बंदर इन्सान की हरकतों का तार्किक विश्लेषण कर सकते हैं। इस बात का पता उन्हें एक रोचक प्रयोग से चला है।

6 मेकाक बंदरों को एक क्रिया दिखाई गई - एक महिला को एक खिलौना उठाना था जो एक अवरोध के दूसरी ओर रखा गया था। कई बार देखने के बाद बंदर इसके आदी हो गए कि अवरोध के उस पार रखे खिलौने को उठाने के लिए महिला को किस तरह का प्रयास करना पड़ता है। अब अवरोध हटा दिया गया और महिला ने वही खिलौना उठाया। यही रोचक हिस्सा था।

अवरोध हट जाने के बाद जब महिला सीधे-सीधे यानी बगैर विशेष प्रयास के वह खिलौना उठाती थी तो बंदर उस पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते थे। मगर यदि अवरोध हट जाने के बाद भी वह महिला उसी तरह का प्रयास करने का नाटक करती थी तो बंदर उसे घूरते थे। इसका मतलब है कि वे उसकी हरकत पर ज़्यादा ध्यान देते थे। गेलीस का मत है कि इससे पता चलता है कि अवरोध हट जाने के बाद भी जब महिला विशेष प्रयास करती है तो बंदरों को उसकी हरकत गैर-तार्किक लगती है, इसलिए वे अचंभे से उसे देखते रहते हैं। यानी वे जानते हैं कि अवरोध हट जाने के बाद उस महिला को क्या करना चाहिए।

गेलीस का निष्कर्ष है कि बंदरों में दूसरों के व्यवहार के विश्लेषण की क्षमता होती है। इसी तरह का एक प्रयोग पूर्व में चिंपैंज़ी के साथ भी किया जा चुका है और परिणाम ऐसे ही रहे थे। उस प्रयोग में एक व्यक्ति अपने सिर से बिजली का स्विच ऑन करता है, जबकि उसके दोनों हाथ खाली हैं। इसके बाद जब चिंपैंज़ी को मौका दिया गया तो उसने भी सिर से ही स्विच ऑन किया। मगर जब उस व्यक्ति के दोनों हाथों में सामान था और उसने सिर से स्विच ऑन किया तो उसकी देखा-देखी चिंपैंज़ी ने सिर से स्विच ऑन नहीं किया, उसने अपने हाथों का ही उपयोग किया। इससे पता चलता है कि पहले मामले में चिंपैंज़ी ने माना कि स्विच ऑन करने के लिए सिर का उपयोग ज़रूरी है मगर दूसरी बार वह समझ गया कि व्यक्ति हाथ व्यस्त होने की वजह से सिर का उपयोग कर रहा है। यानी वह उस व्यक्ति के व्यवहार में तार्किकता को समझ पाता है।

यह कहना मुश्किल है कि क्या जंतुओं में दिमाग होने की बात इतनी आसानी से स्वीकार हो जाएगी मगर ये प्रयोग इतना तो दर्शाते ही हैं कि जानवरों में हमारी अपेक्षा से ज़्यादा क्षमताएं मौजूद हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***